बाइबल अध्ययन का परिचय

बाइबल अध्ययन का परिचय: पाठ्यक्रम

टिप्पणियाँ -

कक्षा #१:

I. बाइबल अध्ययन का परिचय।
II. अवलोकन।

कक्षा #२:

III. व्याख्या।
IV. अनुप्रयोग।

कक्षा #३:

V. व्यावहारिक बाइबल अध्ययन पाठ्यक्रम की तैयारी।

कक्षा #४:

V. व्यावहारिक बाइबल अध्ययन पाठ्यक्रम की तैयारी। (जारी)

कक्षा #५:

VI. पाठ्यक्रम निष्कर्ष।
परीक्षा।

टिप्पणियाँ -

बाइबल अध्ययन का परिचय: परीक्षा

"आगमनात्मक बाइबल अध्ययन" पाठ्यक्रमों में अन्य पाठ्यक्रमों के समान परीक्षा नहीं होती है। परीक्षा के समय का उपयोग वास्तव में आगमनात्मक बाइबल अध्ययन करने के लिए किया जाना है।

यह परिचयात्मक पाठ्यक्रम अवलोकन करने पर ध्यान केंद्रित करता है। छात्र को बाइबल से एक गद्यांश दिया जाता है और वह परीक्षा के समय का उपयोग गद्यांश का अध्ययन करने और अवलोकन करने के लिए करता है। छात्र समय के अनुसार कई अवलोकन बना सकता है, परन्तु वह दस सबसे महत्वपूर्ण वालों को प्रस्तुत करने के लिए जिम्मेदार है। इन दस अवलोकनों के महत्व, अंतर्दृष्टि, स्पष्टता आदि के अनुसार अंक दिए जाते हैं।

बाइबल अध्ययन का परिचय

टिप्पणियाँ -

बाइबल अध्ययन श्रृंखला के पाँच पाठ्यक्रम:

१. बाइबल अध्ययन पाठ्यक्रम का परिचय।

२० घंटे का एक पाठ्यक्रम जो बताता है कि बाइबल का अध्ययन कैसे करें।

पाठ्यक्रम का पहला भाग **आगमनात्मक** बाइबल अध्ययन के विभिन्न चरणों का संक्षिप्त सारांश देता है। बाइबल अध्ययन का यह तरीका रॉबर्ट ट्रेना की किताब **मेथडिकल बाइबल स्टडी** पर आधारित है। इसमें अवलोकन, व्याख्या और अनुप्रयोग सम्मिलित हैं।

पाठ्यक्रम का दूसरा भाग पुस्तक में सामान्य और विशिष्ट अवलोकनों के साथ, फिलिप्पियों की पुस्तक का परिचय देता है। यह श्रृंखला के अगले चार पाठ्यक्रमों की तैयारी है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि छात्र अवलोकन करना सीखना आरम्भ कर देता है।

श्रृंखला के अन्य पाठ्यक्रमों का अध्ययन करते हुए पहले पाठ्यक्रम की सामग्री को फिर से संदर्भित किया जाना चाहिए। शिक्षक और छात्र विशेष रूप से उस भाग की समीक्षा करना चाहें जिसे विशिष्ट अवलोकन कहा जाता है।

२. व्यावहारिक बाइबल अध्ययन I पाठ्यक्रम

२० घंटे का एक पाठ्यक्रम जिसे बाइबल अध्ययन का अभ्यास करने के लिए प्रयोग किया जाता है। छात्र फिलिप्पियों १:१-२:१८ का आगमनात्मक अध्ययन करने के लिए परिचय पाठ्यक्रम में सीखी गई बातों का उपयोग करता है।

३. व्यावहारिक बाइबल अध्ययन II पाठ्यक्रम

२० घंटे का एक पाठ्यक्रम जिसका उपयोग बाइबल अध्ययन के अभ्यास को जारी रखने के लिए किया जाता है। छात्र फिलिप्पियों (२:१९-४:२३) के अपने अध्ययन को जारी रखता है।

४. व्यावहारिक बाइबल अध्ययन III पाठ्यक्रम

२० घंटे का एक पाठ्यक्रम जिसका उपयोग छात्र की बाइबल का अध्ययन करने और दूसरों के साथ संवाद करने की क्षमता को और बढ़ाने के लिए किया जाता है। मलाकी १:१-२:१६ के एक अध्ययन के माध्यम से, छात्र बाइबल अध्ययन के विषय में सीखी गई बातों का उपयोग पद्यों के अवलोकन, व्याख्या और अनुप्रयोग करने की अपनी क्षमता को बढ़ाने के लिए करता है।

५. व्यावहारिक बाइबल अध्ययन IV पाठ्यक्रम

मलाकी २:१७-४:६ के अध्ययन के साथ श्रृंखला को समाप्त करने वाला २० घंटे का पाठ्यक्रम।

बाइबल अध्ययन का परिचय

टिप्पणियाँ -

बाइबल अध्ययन नियत कार्य

यह श्रंखला रॉबर्ट ट्रेना की मेथडिकल बाइबल स्टडी नामक किताब पर आधारित है। यह पाठ्यक्रम सबसे प्रभावी तब होते हैं यदि उनका अध्ययन निम्नलिखित नियत कार्यों के साथ किया जाता है:

१. बाइबल अध्ययन का परिचय: ट्रेना की किताब के पृष्ठ ८-६२ पढ़िए।

२. व्यावहारिक बाइबल अध्ययन I: ट्रेना की पुस्तक के पृष्ठ ६५-१०९ पढ़िए।

३. व्यावहारिक बाइबल अध्ययन II: ट्रेना की किताब के पृष्ठ ११०-१६६ पढ़िए।

४. व्यावहारिक बाइबल अध्ययन III: ट्रेना द्वारा पुस्तक की समीक्षा करें।

५. व्यावहारिक बाइबल अध्ययन IV: ट्रेना की किताब के पृष्ठ २८-४५, ५४-५८ और ६६-१०८ का पुन: अध्ययन करें।

प्रत्येक पाठ्यक्रम में व्यावहारिक बाइबल अध्ययन नियत कार्य भी दिए जाने चाहियें जो छात्र को बाइबल के एक विशिष्ट भाग से अवलोकन करने, उसकी व्याख्या करने और उसका अनुप्रयोग करने के लिए चुनौती देते हैं।

शिक्षक को चर्चा में छात्रों की अगुआई करने के लिए प्रत्येक पाठ्यक्रम की सामग्री का उपयोग करना चाहिए। छात्रों की अधिक भागीदारी होनी चाहिए जब शिक्षक अगुआई करने का प्रयास करते हैं और छात्रों की अवलोकन, व्याख्या और अनुप्रयोग करने के लिए प्रेरित करते हैं।

बाइबल अध्ययन का परिचय

I. बाइबल अध्ययन का परिचय।

टिप्पणियाँ -

क. आगमनात्मक बाइबल अध्ययन।

१. **बाइबल।**

क. बाइबल परमेश्वर का प्रेरित वचन है (२ तीमु. ३:१६)।

ख. इसके लेखक पवित्र आत्मा हैं। लेखक द्वारा उपयोग किया गया साधन मनुष्य है (२ पत. १:२१)।

ग. इसलिए, बाइबल मानव भाषा में परमेश्वर का वचन है।

१) परमेश्वर का वचन।

क) यह त्रुटि के बिना है। इस पर भरोसा किया जा सकता है (भज. ११९:८९; मत्ती २४:३५)।

ख) यह मात्र एक किताब नहीं है। यह जीवित है। इसमें सामर्थ है (इब्रा. ४:१२)।

२) मानव भाषा में।

क) क्योंकि बाइबल मानव भाषा में लिखी गई थी, इसलिए इसका व्याकरणिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और संदर्भगत रूप से अध्ययन किया जाना चाहिए। बाइबल पुरुषों द्वारा लिखी गई थी। हमें संचार के मानवीय रूप (व्याकरणिक) पर विचार करना चाहिए। हमें मानवीय घटनाओं (ऐतिहासिक) पर विचार करना चाहिए। हमें मानवीय आदतों या प्रथाओं (सांस्कृतिक) पर विचार करना चाहिए। अंततः, हमें विचार के मानवीय प्रवाह (संदर्भगत रूप) पर विचार करना चाहिए।

ख) जैसा कि डॉ. चार्ल्स होल्मन लिखते हैं: "जैसे यीशु मसीह की मानवता को नकारना गलत है, वैसे ही बाइबल की मानवता को नकारना भी गलत है। हम यह **नहीं** कह रहे हैं कि बाइबल कोई चूक युक्त किताब है और त्रुटि सिखाती है, परन्तु फिर भी हमें मानना चाहिए कि परमेश्वर का संदेश निश्चित समय और संस्कृतियों में मानवीय विचारों की सामान्य प्रक्रियाओं के माध्यम से हमारे पास आया है, यदि हमें परमेश्वर के वचन को सही ढंग से संभालना है।"[२]

टिप्पणियाँ -

२. अध्ययन।

क. मसीहियों को बाइबल का अध्ययन करने की आज्ञा दी गई है (२ तीमु. २:१५)।

ख. बस यूँ ही बाइबल पढ़ना पर्याप्त नहीं है। सटीक रूप से संभालने के लिए इसका परिश्रमपूर्वक अध्ययन किया जाना चाहिए।

ग. इसका केवल दिमाग़ से अध्ययन नहीं किया जा सकता है। इसका अध्ययन आत्मा के साथ किया जाना चाहिए (१ कुरिं. २:१४, १५)।

घ. इसका अध्ययन प्रार्थनापूर्वक किया जाना चाहिए (भज. ११९:१२, १८)।

ङ. इसका अध्ययन लगातार किया जाना चाहिए (१ पत. २:२, ३; भज. १:२; ११९:१५, १६)।

च. बाइबल के शिक्षक पवित्र आत्मा हैं (यूहन्ना १६:१३-१५)।

३. आगमनात्मक।

क. आगमनात्मक बाइबल अध्ययन यह पता लगाने का प्रयास करता है कि बाइबल क्या कहती है। यह बाइबल को वह बताने का प्रयास नहीं करता कि क्या कहना है (निगमनात्मक बाइबल अध्ययन)।

ख. आगमनात्मक बाइबल अध्ययन पवित्रशास्त्र के विवरणों के साथ आरम्भ होता है और <u>उनके</u> निष्कर्ष तक उनका अनुसरण करता है। निगमनात्मक बाइबल अध्ययन <u>अपने</u> निष्कर्षों से आरम्भ होता है और फिर अपनी बात को प्रमाणित करने के लिए बाइबल का उपयोग करने का प्रयास करता है।

ग. आगमनात्मक बाइबल अध्ययन अपने परिप्रेक्ष्य में निष्पक्ष रहने का प्रयास करता है। इसकी कोई "पूर्वनिर्धारित शिक्षा" नहीं है जिसे यह संरक्षित करना चाहता है। इसकी एक इच्छा है: बाइबल को वह कहने दें, जो बाइबल कहती है।

चर्चा विषय

हमारे उद्देश्य हमारे बाइबल अध्ययन को कैसे प्रभावित करते हैं?

बाइबल के विषय में हमारे रवैये हमारे बाइबल अध्ययन को कैसे प्रभावित करते हैं?

टिप्पणियाँ -

ख. आगमनात्मक बाइबल अध्ययन के तीन चरण (पूरी श्रृंखला का ध्यान केंद्रित बिंदु):

१. अवलोकन।

२. व्याख्या।

३. अनुप्रयोग।

लेखक की टिप्पणी:

आइए हम आगमनात्मक बाइबल अध्ययन के प्रत्येक चरण की संक्षिप्त व्याख्या पर विचार करें। जैसे-जैसे आप ट्रेना किताब में अपने नियत कार्यों को पढ़ते हैं, वैसे-वैसे प्रत्येक चरण के विषय में आपकी समझ बढ़ती जाएगी। जैसा कि आप प्रत्येक पाठ्यक्रम की सामग्री से होकर जाते हैं, आपके पास प्रत्येक चरण का अभ्यास करने और यह समझने का अवसर होगा कि चरण एक साथ कैसे बहते हैं।

II. अवलोकन।

क. अवलोकन करने का परिचय।

१. आगमनात्मक बाइबल अध्ययन की प्रक्रिया एक मज़बूत घर बनाने की प्रक्रिया के समान है। निसंदेह, एक मजबूत घर बनाने की कुंजी उसकी नींव की मजबूती में है। आगमनात्मक बाइबल अध्ययन "घर" की नींव **अवलोकन** है।

क. एक अवलोकन बाइबल को अर्थ नहीं देता है। यह केवल उसे ही देखता है जो बाइबल में लिखा है।

ख. यह अक्सर "एक प्रकाशन" नहीं होता, परन्तु यह अक्सर "एक प्रकाशन" की ओर ले जाता है।

ग. अवलोकन निष्पक्ष है। इसकी कोई राय नहीं है। यह बस देखता है कि क्या लिखा है।

टिप्पणियाँ -

२. अवलोकन निम्न की जागरूकता है:

क. शर्तें।

ख. व्याकरणिक संबंध।

ग. साहित्यिक संबंध।

ख. शर्तों का अवलोकन।

१. हम एक ऐसे शब्द का अवलोकन कर सकते हैं (उससे अवगत हो सकते हैं) जो किसी विचार को समझने के लिए आवश्यक प्रतीत होता है। या हो सकता है कि हम कुछ शर्तों के अर्थ को समझ ही न पाएँ। किसी भी मामले में, हम उस शब्द के विषय में और जानना चाहेंगे।

क. शब्द की क्या परिभाषा है?

१) आपकी भाषा में।

२) अधिक विशेष रूप से, मूल यूनानी भाषा में।

ख. शब्द की क्या प्रकृति है?

१) क्या यह बहुवचन है या एकवचन है?

२) क्या यह एक आज्ञा है? क्या यह भूतकाल में है?

ग. अन्य पद्यों में शब्द का प्रयोग कैसे किया गया है?

२. ट्रेना किताब में पृष्ठ २८-३० की समीक्षा करें।

३. हम व्यावहारिक बाइबल अध्ययन पाठ्यक्रमों में शब्द अध्ययन सम्मिलित करेंगे। एक शब्दानुक्रमणिका और कुछ यूनानी अध्ययन सहायक सामग्री होना मददगार होगा।

टिप्पणियाँ -

ग. व्याकरणिक और साहित्यिक संबंधों का अवलोकन।

अवलोकनों में तीन चर सम्मिलित होते हैं।

१. एक अवलोकन में सामग्री, संरचनात्मक चीज़ें सम्मिलित होती हैं (जैसा कि ट्रेना उन्हें बोलता है), या "भाग" जैसा कि यहाँ हम उन्हें कहेंगे।

क. व्याकरणिक अवलोकन के भाग शब्द, वाक्यांश, खंड और वाक्य हैं।

ख. साहित्यिक अवलोकन के भाग अनुच्छेद, अनुभाग, खंड, विभाजन और पुस्तकें हैं।

ग. ट्रेना किताब में पृष्ठ ३०-३१ की समीक्षा करें।

२. एक अवलोकन में भागों के बीच संबंध सम्मिलित होता है।

क. यह वह संबंध है जो दो अलग-अलग भागों को एक साथ जोड़ता है (उदाहरण के लिए "दोहराना" नामक संबंध वह है जो दो शब्दों को एक साथ जोड़ सकता है या विपरीत नामक संबंध वह है जो दो अनुच्छेदों को एक साथ जोड़ सकता है)।

ख. व्याकरणिक संबंध (शब्दों, वाक्यांशों, खंडों और वाक्यों के बीच संबंध) को अक्सर अवलोकन कुंजी "जोड़ने वाले शब्दों" या संयोजनों से देखा जाता है।

उदाहरण

फिल १:२० में जोड़ने वाला शब्द **"पर"** दो वाक्यांशों (भागों) **"बात में लज्जित"** और **"प्रबल साहस"** के बीच **विपरीत** के संबंध को स्थापित करता है। ट्रेना पुस्तक में पृष्ठ ३३-३९ की समीक्षा करें।

ग. साहित्यिक संबंध (अर्थात अनुच्छेदों, अनुभागों, खंडों, विभाजनों और पुस्तकों के बीच संबंध) को अक्सर तब देखा जाता है जब पर्यवेक्षक एक चीज़ या भाग के अर्थ को समग्र रूप से मान लेता है।

टिप्पणियाँ -

उदाहरण

प्रेक्षक यह विचार करने के बाद कि उत्पत्ति १३-१४ और उत्पत्ति १८-१९ के मुख्य विचार क्या हैं, वह दो खंडों (भागों) के बीच निरंतरता के संबंध को देख सकता है। ट्रेना पुस्तक में पृष्ठ ३९-४२ की समीक्षा करें।

३. एक अवलोकन में वचन का पद्य सम्मिलित होता है। छात्र को हमेशा अपने अवलोकन में वचन के पद्य को सम्मिलित करना स्मरण रखना चाहिए।

लेखक की टिप्पणी:

विशिष्ट संबंधों की निम्नलिखित सूची भागों के बीच अवलोकन संबंधों को देखने के लिए एक मार्गदर्शिका है (फिलिप्पियों की पुस्तक से उदाहरण)।

१. **दोहराव:** दोहराए गए शब्द, वाक्य, विचार आदि (१:१, २)।

२. **उद्देश्य:** किसी कार्य का लक्ष्य (१:९, १०)।

३. **कारण:** क्यों कुछ किया गया (१:४, ५)।

४. **प्रेरणा:** जो प्रेरित करता है (१:१५)।

५. **कारण और प्रभाव:** एक कार्य जो एक निश्चित परिणाम की ओर ले जाता है (१:१२-२६ और २:१९-३०)।

६. **तरीका:** जिस तरीके से कुछ पूरा किया गया है (१:१९)।

७. **सारांश या निष्कर्ष:** किसी विचार को फिर से कहना या समाप्त करना (४:८)।

८. **परिचय:** वह जो किसी और चीज के लिए तैयार करता है (३:१)।

९. **अविराम:** वाक्यों, विचारों आदि का दोहराना (४:७, ९)।

१०. **निरंतरता:** पिछले विचार का विस्तार (१:२७-२:१८ और ३:१-४:९)।

टिप्पणियाँ -

११. तुलना: किसी चीज़ को किसी और चीज़ के सम्बन्ध में बनाना (३:२)।

१२. विपरीत: विलोम या विकल्प का गठन (३:१७-१९)।

१३. विशिष्टता: सामान्य से विशिष्ट की ओर जाना (१:३-८ और १:९-११)।

१४. सामान्यीकरण: विशिष्ट से सामान्य की ओर जाना (४:८)।

१५. स्पष्टीकरण: किसी चीज के अर्थ और समझ को स्पष्ट या विस्तारित करना (२:१२, १३)।

१६. स्रोत: एक चीज दूसरे से आती है (१:६)।

१७. पहचान: किसी चीज़ की परिभाषा (३:२, ३)।

१८. श्रृंखला: विचारों, दृष्टिकोणों, आदि की एक सूची (३:४-६)।

१९. सही ठहराना या युक्तिकरण: क्यों कुछ माना जाता है या सच होना या हुआ होना चाहता है (१:२९)।

२०. तात्पर्य: एक चीज तार्किक रूप से दूसरी की ओर ले जाती है (२:१२)।

२१. वैकल्पिक: एक चीज दूसरे की जगह लेती है (४:६)।

२२. अनुप्रयोग: सिद्धांत को व्यावहारिक बनाना (३:११-१६ और ३:१५-१६)।

२३. संतुलन: किसी स्थिति, तर्क, आदि के दोनों पक्षों को सहित लेना (३:१२)।

२४. समय और स्थान: 'कब' और 'कहाँ' को परिभाषित करने वाले संबंध (४:१५)।

२५. परिणाम: एक कार्य, विचार, आदि का परिणाम (४:६, ७)।

२६. प्रश्नवाचक: प्रश्न और उत्तर (१:१८)।

टिप्पणियाँ -

अवलोकन उदाहरण:

विशिष्ट अवलोकन में तीन चर होते हैं। निम्नलिखित उदाहरण इन तीन चरों को दिखाता है।

अवलोकन - शब्द "**इसलिये**" दो बार **दोहराया** गया है (३:१ और ४:८)।

१. **भाग** शब्द ("इसलिये") हैं।

२. **भागों के बीच संबंध** दोहराव है।

३. **वचन के पद्य** ३:१ और ४:८ हैं।

स्मरण रखें: भागों के बीच संबंध में कम से कम दो भाग सम्मिलित होने चाहिए। एक **दोहराव** में कम से कम दो भाग होने चाहिए (कुछ किसी और का दोहराव है)। एक **उद्देश्य** में कम से कम दो भाग सम्मिलित होने चाहिए (कुछ किसी और का उद्देश्य है)।

घ. अवलोकन का महत्व।

१. अवलोकन बाइबल अध्ययन की नींव बनाते हैं।

क. अवलोकन व्याख्याओं (प्रश्न और उत्तर) की ओर ले जाते हैं।

ख. व्याख्याएं अनुप्रयोगों की ओर ले जाती हैं।

ग. अवलोकन से व्याख्या और उससे अनुप्रयोग की ओर बढ़ने की प्रक्रिया ४५-१०० ईस्वी सन् से वर्तमान वर्ष की ओर बढ़ने की प्रक्रिया है।

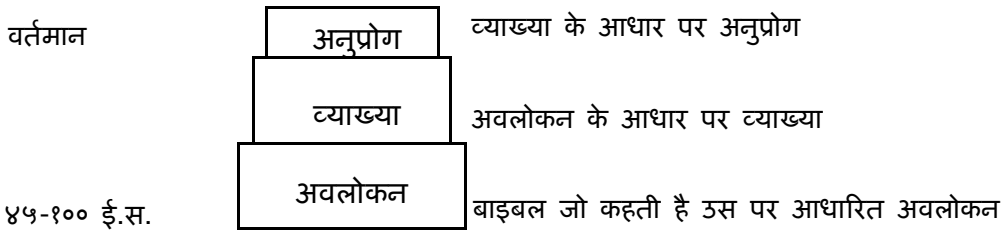

टिप्पणियाँ -

२. अवलोकन बाइबल अध्ययन की ताकत को प्रभावित करते हैं।

क. यह आवश्यक है कि बाइबल अध्ययन की प्रक्रिया एक प्रगतिशील क्रम में हो। प्रक्रिया अनुप्रयोगों से पहले व्याख्याओं और व्याख्याओं से पहले अवलोकनों को रखती है।

ख. आगमनात्मक बाइबल अध्ययन के चल रहे चरण की ताकत अगले चरण की ताकत को प्रभावित करेगी। अंत में, अवलोकन जितना मजबूत होगा, उतना ही मजबूत अनुप्रयोग होगा।

१) अधिक वैध अवलोकनों से अधिक वैध अनुप्रयोग मिलते हैं।

२) अधिक स्पष्ट अवलोकन अधिक स्पष्ट अनुप्रयोगों की ओर ले जाते हैं।

३) अधिक महत्वपूर्ण अवलोकन अधिक महत्वपूर्ण अनुप्रयोगों की ओर ले जाते हैं।

४) अधिक पूर्ण अवलोकन अधिक पूर्ण अनुप्रयोगों की ओर ले जाते हैं।

५) अधिक विशिष्ट अवलोकन अधिक विशिष्ट अनुप्रयोगों की ओर ले जाते हैं।

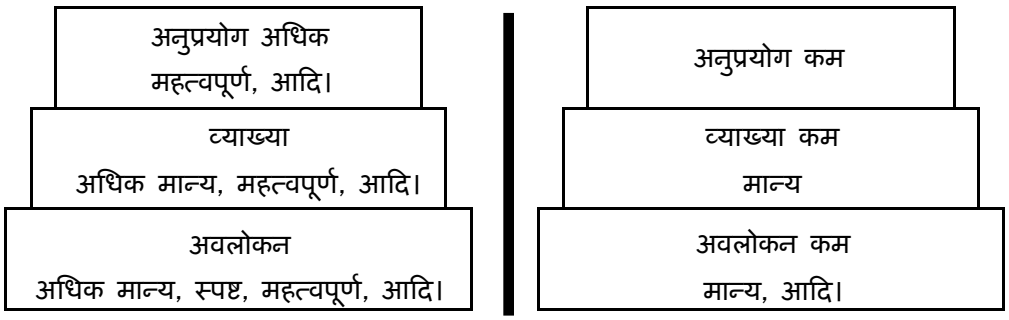

चर्चा विषय

इसके उदाहरण प्रस्तुत करें कि यह प्रगति नकारात्मक और सकारात्मक दोनों प्रकार से कैसे होती है।

टिप्पणियाँ -

III. व्याख्या।

क. व्याख्या की प्रक्रिया में दो चरण सम्मिलित हैं।

१. व्याख्या से ऐसे प्रश्न उत्पन्न होते हैं जो अवलोकनों द्वारा प्रेरित होते हैं।

२. व्याख्या ऐसे उत्तरों का निर्माण करती है जो अवलोकनों पर आधारित होते हैं।

ख. व्याख्यात्मक प्रश्न तीन प्रमुख प्रकार के हैं।

१. निश्चित - अर्थ वाले प्रश्न।

क. शब्दों का अर्थ। शब्द "**इसलिये**" (फिलि. ३:१ और ४:८) का क्या अर्थ है?

ख. व्याकरणिक संबंधों का अर्थ। संबंध "**इसलिये कि**" (१:५) का क्या अर्थ है?

ग. साहित्यिक संबंधों का अर्थ। ऊँचा उठाए जाने की विशिष्टता (२:९-११) का क्या अर्थ है?

२. तर्कसंगत - "क्यों" प्रश्न।

क. क्यों?: शर्तें - पौलुस २:६ में "**होकर भी**" शब्द का उपयोग क्यों करता है?

ख. क्यों?: व्याकरणिक संबंध। पौलुस की कैद का परिणाम सुसमाचार की प्रगति क्यों होता है?

ग. क्यों?: साहित्यिक संबंध। यह क्यों सच है कि ऊँचा उठाया जाना प्रभाव है और मृत्यु विधि है (२:५-९)?

टिप्पणियाँ -

घ. "क्यों" प्रश्न ऐतिहासिक, साहित्यिक या धर्मविज्ञान स्तरों पर किए जा सकते हैं।

१) क्यों?: ऐतिहासिक स्तर (यह क्रिया या घटना क्यों हुई?) इपफ्रुदीतुस (२:२५) फिलिप्पी क्यों लौटना चाहता था?

२) क्यों?: साहित्यिक स्तर (लेखक ने वह क्यों लिखा जो उसने किया और कैसे किया?) पौलुस ने यह समझाने के लिए अपने निर्देशों (१:२७-२:१८ और ३:१-४:९) को क्यों बाधित किया कि वह तीमुथियुस और इपफ्रुदीतुस (२:१९-३०) को भेजेगा?

३) क्यों?: धर्मविज्ञान स्तर (एक कथन सत्य या आवश्यक क्यों है?) यह क्यों सच है कि जीना मसीह और मरना लाभ है (१:२१)?

ङ. ध्यान दें कि शर्तों से संबंधित "क्यों" प्रश्न तीन स्तरों (ऐतिहासिक, साहित्यिक, या धर्मविज्ञानिक) में से किसी भी एक पर किए जा सकते हैं। उदाहरण के लिए, १:१ में "**दास**" शब्द पर विचार करें।

१) पौलुस ने स्वयं को एक "**दास**" के रूप में क्यों सोचा (ऐतिहासिक स्तर)?

२) पौलुस ने "**दास**" शब्द का प्रयोग क्यों किया (साहित्यिक स्तर)?

३) यह सच क्यों है कि पौलुस "**मसीह यीशु के दास**" हैं (धर्मविज्ञान स्तर)?

च. "क्यों" प्रश्नों के विषय में यह व्याकरणिक या साहित्यिक संबंधों के लिए भी सच है। इन्हें भी तीनों स्तरों पर किया जा सकता है।

चर्चा विषय

विभिन्न संभावनाओं को संक्षेप में बताने और समझाने के लिए
निम्नलिखित आरेख का उपयोग करें।

३. तात्पर्य।.

क. ये प्रश्न "क्यों" प्रश्नों के उत्तर पर आधारित हैं।

टिप्पणियाँ -

	ऐतिहासिक	साहित्यिक (लेखक के उद्देश्य)	धर्मविज्ञान
शब्दों का अवलोकन	कलीसिया में प्राचीन क्यों थे?	पौलुस ने प्राचीनों के बहुवचन रूप का प्रयोग क्यों किया?	यह सच क्यों है कि कलीसिया में प्राचीन हैं?
व्याकरणिक संबंधों का अवलोकन	पौलुस ने फिलिप्पी वासियों के लिए प्रार्थना क्यों की?	पौलुस ने इस तथ्य पर ज़ोर क्यों दिया कि उसने फिलिप्पी वासियों के लिए प्रार्थना की?	यह सच क्यों है कि प्रार्थना प्रेरितिक सेवकाई का एक महत्वपूर्ण पहलू है?
साहित्यिक संबंधों का अवलोकन	पौलुस ने तीमुथियुस को क्यों भेजा?	पौलुस ने यह कहने के लिए अपने पत्र को क्यों बाधित किया कि वह तीमुथियुस को भेजेंगे?	किसी को वापस भेजना नियुक्त-सेवा आधारित सही क्यों है? (कुछ कुछ व्याख्यात्मक)

ख. वे किसी विशेष उत्तर के तात्पर्य, प्रभाव या परिणाम के विषय में पूछते हैं।

ग. तात्पर्य प्रश्नों का उपयोग व्याख्या और अनुप्रयोग के बीच पुलों के रूप में किया जा सकता है।

टिप्पणियाँ -

उदाहरण

इस प्रश्न का एक निश्चित उत्तर हो सकता है, "**पौलुस क्यों कहते हैं कि मरना लाभ है?**" (१:२१)।

उस उत्तर के आधार पर हम एक तात्पर्य प्रश्न पूछ सकते हैं, **"फिलिप्पी वासियों के लिए इस उत्तर के क्या तात्पर्य हैं?"**

लेखक का सुझाव:

व्याख्यात्मक प्रश्न बनाने के लिए सुझाव:

१) अपने प्रश्नों को संक्षिप्त और स्पष्ट बनाने का प्रयास करें।

२) सुनिश्चित करें कि आपके प्रश्न आपके अवलोकन से निकलें।

३) अपने प्रश्नों के भीतर व्याख्या न करने का प्रयास करें।

अच्छा प्रश्न: **पौलुस ने "अध्यक्षों" शब्द को क्यों सम्मिलित किया?** (फिलि. १:१)।

बुरा प्रश्न: **पौलुस ने "अध्यक्षों" शब्द को अगुवों और कलीसिया के बीच अंतर करने के तरीके के रूप में क्यों सम्मिलित किया?**

ग. व्याख्यात्मक उत्तर।

१. उत्तर अवलोकनों पर आधारित होने चाहिए। आपको अपने उत्तर को बाइबल वचनों से प्रमाणित करने में सक्षम होना चाहिए।

२. कभी-कभी ऐसा करने के लिए आपको तत्काल संदर्भ को छोड़ना पड़ सकता है, परन्तु बाइबल के अन्य भागों पर आगे बढ़ने से पहले तत्काल संदर्भ के उपयोग के साथ प्रश्न का उत्तर देने का एक गंभीर प्रयास होना चाहिए।

टिप्पणियाँ -

लेखक की टिप्पणी:

व्याख्यात्मक प्रश्नों के उत्तर देने में प्राथमिकताओं की निम्नलिखित सूची स्थापित करें:

१) तत्काल संदर्भ (शब्द, वाक्यांश, खण्ड, और वाक्य जो प्रश्न में वचन के भाग से पहले आते हैं और बाद में आते हैं)।

२) पिछले अनुच्छेद।

३) पिछले खण्ड।

४) पुस्तक के अन्य भाग।

५) साहित्य का प्रकार (सुसमाचार पुस्तक से किसी प्रश्न का उत्तर देते समय भविष्यवाणी की पुस्तक पर विचार करने से पहले दूसरे सुसमाचार पुस्तक पर पहले विचार करना बेहतर होता है)।

६) नया या पुराना नियम (यदि प्रश्न नए नियम के गद्यांश से आता है तो पहले नए नियम पर विचार करना बेहतर है)।

७) बाइबल के अलावा अन्य स्रोत।

ध्यान दें: अवलोकन से प्रश्न से उत्तर की ओर जाना स्पष्ट होना चाहिए। हमारे पास व्यावहारिक बाइबल अध्ययन पाठ्यक्रमों में इस प्रगति का अभ्यास करने का पर्याप्त अवसर होगा।

IV. अनुप्रयोग।

क. अनुप्रयोग करने का परिचय।

१. अनुप्रयोग बाइबल अध्ययन के फल का प्रतिनिधित्व करते हैं। यह जो सीखा है उसे लेना और उसे उपयोग में लाना है। अनुप्रयोग प्रक्रिया पाठक को अपने जीवन में बाइबल को लागू करने के लिए प्रोत्साहित करने और चुनौती देने की प्रक्रिया है। उस चुनौती को संचारित करने के विभिन्न तरीके हैं।

२. बाइबल अध्ययन के अन्य चरणों के कुछ सुझाव समान रूप से अनुप्रयोग चरण पर भी लागू होते हैं (उदाहरण के लिए, विशिष्ट होना, स्पष्ट होना, व्यावहारिक होना, आदि)।

ख. अनुप्रयोग प्रक्रिया में उपयोग किए जाने वाले संचार उपकरण।

टिप्पणियाँ -

१. बाइबल कहानियाँ (बाइबल से किसी घटना या कहानी का उपयोग करके बाइबल सिद्धांतों को लागू करना)।

उदाहरण

संभवतः आपके अवलोकनों और व्याख्याओं ने आपको परमेश्वर की आज्ञा मानने के महत्व के सिद्धांत को विकसित करने के लिए अगुआई की है। इसे लागू करने के लिए, आप योना और मछ की कहानी का सन्दर्भ देकर आरम्भ कर सकते हैं।

२. उपमाएँ (रूपकों, समानता आदि का उपयोग)।

उदाहरण

आप यह कहकर जारी रख सकते हैं कि परमेश्वर की आज्ञा मानने का महत्व एक विधि का पालन करने के महत्व के समान है। यदि आप विधि का सही ढंग से पालन नहीं करते हैं तो आप उसका आनंद नहीं ले सकते हैं, जो खाते हैं।

३. जीवन की वास्तविक कहानियाँ।

उदाहरण

आप दिखा सकते हैं कि आपके अपने जीवन में एक निश्चित स्थिति में परमेश्वर की आज्ञा मानना कितना महत्वपूर्ण था।

४. दृष्टांत (श्रोता के लिए एक काल्पनिक चित्र बनाना)।

उदाहरण

आप कई लोगों के लिए किसी सामान्य व्यावहारिक स्थिति का वर्णन कर सकते हैं जिसे कि वे पहचान सकें, फिर उस स्थिति पर सिद्धांत लागू करें।

टिप्पणियाँ -

५. प्रश्न।

उदाहरण

आप बस सीधे प्रश्नों के साथ सिद्धांत को लागू करना चाह सकते हैं जो पाठक को अपने जीवन के विषय में सोचने के लिए चुनौती देते हैं।

ध्यान दें: प्रश्नों का प्रयोग व्यावहारिक बाइबल अध्ययन पाठ्यक्रमों के अनुप्रयोग खंडों में किया जाता है। अनुप्रयोग प्रक्रिया को जारी रखने के लिए अन्य उपकरणों का उपयोग करने का चुनाव छात्र पर छोड़ दिया जाता है।

लेखक का सुझाव:

अनुप्रयोग करने के लिए सुझाव:

अनुप्रयोग व्यावहारिक होने चाहियें। लक्ष्य बाइबल के सिद्धांतों को पाठकों के घरों और दैनिक जीवन में लाना है। पाठक यह कहने में सक्षम होना चाहिए, "बाइबल का यह बिंदु मुझसे और मेरे जीवन से मिलता जुलता है।"

अनुप्रयोग इतना विशिष्ट होना चाहिए कि लोग उसे अपने जीवन से जोड़ सकें।

अच्छा अनुप्रयोग: ईमानदार होने की आज्ञा आपके काम पर आपको कैसे प्रभावित करती है? जब आपका वेतन उससे अधिक घंटों के लिए आ जाए जितना कि वास्तव में काम किया हो तो आप क्या करते हैं? क्या आप उसे रख लेते हैं और स्वयं से कहते हैं कि आप वैसे भी अतिरिक्त पैसे के हकदार थे? या क्या आप अपने मालिक को बताते हैं और उसे वह निर्णय लेने देते हैं?

ख़राब अनुप्रयोग: क्या आप ईमानदारी का अभ्यास करते हैं? क्या आप सच बताते हैं?

ध्यान दें: अवलोकन से व्याख्या से अनुप्रयोग तक जाना स्पष्ट होना चाहिए। बाइबल आधारित अनुप्रयोग विचारों की कमजोर नींव पर नहीं **बनाए** जाते हैं। बाइबल के अनुप्रयोग व्याख्या और अवलोकन की मजबूत नींव पर **बनाए** जाते हैं।

V. व्यावहारिक बाइबल अध्ययन पाठ्यक्रम की तैयारी।

टिप्पणियाँ -

कक्षा नियत कार्य:

छात्र को फिलिप्पियों की पुस्तक को कम से कम तीन बार पढ़ना चाहिए।

१. पहली बार पढ़ना: नियमित गति (पुस्तक के ऐतिहासिक संदर्भ की समीक्षा करें; पुस्तक की सामग्री की समीक्षा करें; और पुस्तक के प्रमुख विभाजनों की एक सामान्य रूपरेखा विकसित करें)।

२. दूसरी बार पढ़ना: धीमी गति (विशेषकर पुस्तक के प्रमुख विषयों और शिक्षाओं की खोज के लक्ष्य के साथ सामान्य अवलोकन करना आरम्भ करें)।

३. तीसरी बार पढ़ना: बहुत धीमी गति (प्रत्येक भाग के भीतर एक विस्तृत रूपरेखा विकसित करके अपनी सामान्य रूपरेखा भरना आरम्भ करें; विशिष्ट अवलोकन करना आरम्भ करें)।

इस पाठ्यक्रम के निम्नलिखित भाग उपरोक्त तीन भाग नियत कार्य के लक्ष्यों से मेल खाते हैं। कक्षा का लक्ष्यों को पूरा करने में नेतृत्व करने के लिए शिक्षक इनका उपयोग एक मार्गदर्शक के रूप में कर सकते हैं। शिक्षक को विशेष रूप से विशिष्ट अवलोकनों पर ध्यान देना चाहिए।

टिप्पणियाँ -

क. पहली बार पढ़ना।

१. ऐतिहासिक संदर्भ।

क. लेखक पौलुस है (१:१)।

ख. पुस्तक संभवतः उस समय लिखी गई थी जब पौलुस रोम में नजरबंद था।

ग. यदि हम पुस्तक को पौलुस के रोमी कारावास के दौरान दिनांकित करते हैं, तो यह पुस्तक ६१/६२ ईस्वी सन् में लिखी गई थी।

घ. यह पुस्तक फिलिप्पी की कलीसिया को संबोधित है।

१) फिलिप्पी एक समृद्ध रोमी शहर था। वहाँ की कलीसिया की स्थापना पौलुस ने अपनी दूसरी सेवा-नियुक्त यात्रा पर की थी। लुदिया और फिलिप्पी का दारोगा पहले जीवन परिवर्तित लोग थे (प्रेरितों के काम १६:१२-४०)।

२) फिलिप्पी एक बहुत ही रणनीतिक स्थान था। इसे यूरोप का प्रवेश द्वार माना जाता था और यह व्यापार और यात्रा का काफी व्यस्त चौराहा था।

२. पुस्तक की सामग्री।

क. पत्र लिखने का उद्देश्य।

१) पौलुस को भेजी गई भेंट के लिए धन्यवाद पत्र।

२) पौलुस की परिस्थितियों की एक रिपोर्ट।

३) विशेष रूप से निम्नलिखित क्षेत्रों में निर्देश/चुनौती देने के लिए एक पत्रः

क) एकता।

ख) सताव के विरुद्ध मजबूती से खड़ा होना।

ग) झूठे भाइयों के विरुद्ध चेतावनी।

घ) क्लेशों और समस्याओं के बीच आनंद करना।

४) तीमुथियुस और इपफ्रुदीतुस की यात्राओं के साथ-साथ पौलुस की अपनी संभावित यात्रा को समझाने और तैयारी करने के लिए एक पत्र।

टिप्पणियाँ -

ख. पत्र की विशेषताएँ।

१) यह पौलुस के पत्रों में से सबसे व्यक्तिगत है।

२) प्रमुख विषय आनंद है। "आनंद" शब्द के विभिन्न रूप १६ बार आए हैं। विशेष रूप से, पौलुस आनन्दित होने के विषय में बोलता है:

क) प्रार्थना में (१:४)।

ख) सुसमाचार में (१:१८)।

ग) कारण के लिए बलिदान में (२:१७, १८)।

घ) प्रभु में (३:१)।

ङ) आपसी चिंता में (४:१०)।

ग. सामग्री का सारांश।

१) इस बहुत ही व्यक्तिगत और घनिष्ठ पत्र में पौलुस के दिमाग और आत्मा को स्पष्ट रूप से प्रकट किया गया है। वे शांति और आनंद के व्यक्ति थे। जब वे बंदीगृह में अकेले थे और फांसी का इंतजार कर रहे थे, तो वे इन चीजों से भर गए। उनका क्या रहस्य था? उसने अपना मन मसीह से भर दिया।

२) हाँ, आनन्द इस पुस्तक का मुख्य विषय है, परन्तु केवल इस अर्थ में कि यह मसीह से परिपूर्ण होने का परिणाम है। पुस्तक का केंद्रीय संदेश मसीह है। दरअसल, उसका नाम अकेले पहले अध्याय में १७ बार आता है।

३) निम्नलिखित रूपरेखा पर विचार करें जो यह दर्शाती है कि पौलुस मसीह पर कितना जोर देते हैं।

क) अध्याय १।

(१) आत्मिक फल के स्रोत के रूप में मसीह (१:११)।

(२) प्रचार के विषय के रूप में मसीह (१:१८)।

(३) मसीह मसीही सेवा के सर्वोच्च उद्देश्य के रूप में (१:२०, २१)।

टिप्पणियाँ -

ख) अध्याय २: मसीह ही वह एक है जो एकमात्र सिद्ध आत्मा और उदाहरण प्रदर्शित करता है (२:५-११)।

ग) अध्याय ३:

(१) मसीह: जिसका ज्ञान सर्वोच्च पुरस्कार है जिसके लिए जीवन में संघर्ष करना है (३:७-१४)।

(२) मसीह: जिसके प्रकट होने पर विश्वासियों के शरीर नए बनाए जाएंगे (३:२०, २१)।

घ) अध्याय ४:

(१) मसीह: जिसकी शक्ति एक मसीही के जीवन में असीम है (४:१३)।

(२) मसीह: जो प्रत्येक आवश्यकता के लिए अलौकिक आपूर्ति का स्रोत है (४:१९)।

४) फिलिप्पियों की पुस्तक हर बार पढ़े जाने पर मसीही पाठक को चुनौती देगी। संभवत: फिलिप्पियों, किसी भी अन्य पुस्तक से अधिक है, एक विशेष कलीसिया के लिए पौलुस के गहरे प्रेम को प्रकट करती है। इस प्रकार, यह बहुत चुनौतीपूर्ण है!

३. पुस्तक के मुख्य भागों की रूपरेखा (८ खंडों में विभाजित)।

क. **खण्ड** १: पता और अभिवादन (१:१, २)।

ख. **खण्ड** २: धन्यवाद और प्रार्थना (१:३-११)।

ग. **खण्ड ३:** पौलुस के कारावास के सकारात्मक परिणाम (१:१२-२६)।

घ. **खण्ड** ४: निर्देश और चुनौती (१:२७-२:१८)।

ङ. **खण्ड** ५: दूसरों को उनके पास भेजने की व्याख्या (२:१९-३०)।

च. **खण्ड** ६: निरंतर निर्देश और चुनौती (३:१-४:९)।

छ. **खण्ड** ७: परिशिष्ट भाग: भेंट के लिए धन्यवाद देने की प्रतिक्रिया (४:१०-१९)।

ज. **खण्ड** ८: समापन (४:२०-२३)।

टिप्पणियाँ –

ख. दूसरी बार पढना।

१. सामान्य अवलोकन (प्रमुख विषय और शिक्षाएं)

क. कोइनोनिया (संगती)।

१) इस पुस्तक में साझा करने,प्रतिभागिता करने, सारी चीज़ें मिल बांटकर करने के विचार को बार बार दोहराया गया है।

२) पौलुस अपने और फिलिप्पियों के बींच साझा किये गए जीवन पर बल देने में सावधानी बरतता है।

क) सुसमाचार के फ़ैलाने में **सहभागी** (१:५)।

ख) मेरे साथ अनुगृह में **सहभागी** (१:७)।

ग) आत्मा में **सहभागिता** (२:१)।

घ) मेरे **साथ** आनंद/अपना आनंद **बांटो** (२:१७, १८)।

ङ) उसके क्लेशों में सहभागिता (३:१०)।

च) मेरे कष्टों में सहभागी (४:३)।

छ) मेरे क्लेशों में सहभागी (४:१४)।

ज) मेरी **सहायता** की (४:१५)।

ख. स्रोत के रूप में परमेश्वर।

१) यह एक ईश्वर सम्बन्धी विषय है जिस पर पौलुस ज़ोर देना चाहते हैं। वह परमेश्वर की संप्रभुता पर सकेंद्रित होना चाहते हैं।

२) वह आशा व् आत्मविश्वास रखने के सन्दर्भ में इस पर विशेष ज़ोर देना चाहते हैं।

क) परमेश्वर ने काम **प्रारंभ किया/लगातार** काम करते हैं/काम **पूरा करते हैं** (१:६)।

ख) यीशु के **द्वारा** मिलते हैं (१:११)।

ग) परमेश्वर की **ओर** से है (१:२८)।

टिप्पणियाँ —

घ) परमेश्वर का काम आप **में** जारी है (२:१३)।

ङ) परमेश्वर **से मिलती** हैं (३:९)।

च) परमेश्वर **प्रगट** करेंगे (३:१५)।

छ) उस शक्ति के द्वारा... **वह** ...अपने **वश में कर सकता** है (३:२१)।

ज) उसके द्वारा जो सामर्थ्य देता है (४:१३)।

ग. युगान्त व भविष्य सम्बन्धी विचार।

१) पौलुस अंत समय से जुड़े विचारों को दोहराते हैं।

२) वह भविष्य को लेकर उन्मुख थे।

क) **मसीह यीशु के दिन** के आने तक (१:६)।

ख) **मसीह यीशु के दिन** के आने तक (१:१०)।

ग) मरना लाभ है...कुछ करके **मसीह के साथ** (१:२१, २३)।

घ) **मसीह का दिन** (२:१६)।

ङ) स्वर्गीय **बुलाहट** (३:१४)।

च) उद्धारकर्ता कि **प्रतीक्षा करें** (३:२०)।

छ) रूप बदलकर (३:२१)।

ज) जीवन की पुस्तक में (४:३)।

झ) प्रभु निकट है (४:५)।

टिप्पणियाँ –

घ. उद्धार एक प्रक्रिया के रूप में।

१) पौलुस यहाँ पर अपनी पवित्रीकरण कारण कि शिक्षा का विकास करते हैं।

२) मसीही बढोतरी एक समय के दौरान होती है। मसीही जीवन की चल एक प्रक्रिया है।

क) **सिद्ध** बनें (१:६)।

ख) अपने उद्धार के **निमित्त काम करें** (२:१२)।

ग) मैं **आगे की ओर बड़ा चला जात हूँ** (३:१२)।

घ) **आगे कि ओर बढता हुआ** (३:१३, १४)।

ङ) **बात जोह** रहे हैं (३:२०)।

ङ. मसीह हम में। पौलुस इस शिक्षा को बहुत से तरीकों से वास्तविकता से जोड़ते हैं।

१) मैं तरसता हूँ... **मसीह के स्नेह के साथ** (१:८)।

२) मसीह... मेरे शरीर के **द्वारा महिमा पाए** (१:२०)।

३) जीना **मसीह है** (१:२१)।

४) **परमेश्वर आप में** (२:१३)।

५) **उसमे पाया जाऊं** (३:९)।

६) **उसके द्वारा** (४:१३)।

च. सुसमाचार प्रचार। यह हमेशा पौलुस का सकेंद्र रहा है।

१) **परमेश्वर के वचन को बोल... प्रचार कर... मसीह कि घोषणा कर**। (१:१४, १५, १७)।

२) जगत में **ज्योति**... जीवन के वचनों को **थामे रहें** (२:१५, १६)।

३) तुम्हारी कोमलता सब मनुष्यों पर **प्रगट हो** (४:५)।

टिप्पणियाँ —

छ. कुछ समूहों का नकारात्मक दृष्टिकोण। पौलुस कुछ समूहों के लोगों की नकारात्मक तस्वीर प्रस्तुत करते हैं।

१) गलत उद्देश्यों के साथ प्रचारक (१:७)।

२) आपके **शत्रु** (१:२८)।

३) वे सारे इस **खोज में रहते** हैं (२:२१)।

४) **कुत्तों** से सावधान रहो (३:२)।

५) वे **शत्रु** हैं (३:१८)।

ज. दूसरों पर सकेंद्रित। पौलुस व्यावहारिक और शास्त्रीय तौर पर दूसरों पर सकेंद्रित हैं।

१) तुम सब के लिए **प्रार्थना करता हूँ**... तुम सभी मेरे हृदय में **बसे हो** (१:४, ७)।

२) **तुम्हारे** कारण (१:२४)।

३) एक दुसरे को **अपने से अच्छा समझो** (२:३)।

४) **दूसरे** की भलाई (२:४)।

५) **तुम्हारी** चिंता करे (२:२०)।

६) इन **महिलाओं** कि मदद करो (४:३)।

७) जो...**तुम्हारे** लाभ के लिए (४:१७)।

झ. एकता। पौलुस एकता के महत्त्व को अच्छी तरह से समझते हैं।

१) **एक** आत्मा में स्थिर, एक मन होकर मिलकर **परिश्रम करो** १:२७)।

२) **एक चित्त**...एक ही **मनसा** (२:२)।

३) **बिना...कुढ़कुढ़ाए** (२:१४)।

४) **सोहार्द** में रहें (४:२)।

टिप्पणियाँ –

ञ. क्लेश। पौलुस मसीही क्लेशों के बारे में बार बार चर्चा करने से कभी नहीं डरते।

१) **उसके** लिए दुःख उठा (१:२९)।

२) **दुःख** उठाओ (१:३०)।

३) **क्रूस** की **मृत्यु** (२:८)।

४) लहू भी **बहाना** पड़े (२:१७)।

५) **मृत्यु** के निकट आया (२:३०)।

६) नुकसान **सहा** (३:८)।

७) क्लेशों में **सहभागिता** (३:१०)।

८) घटी को **सहना** (४:१२)।

ट. एक पासबान कि चिंता। पौलुस की पासबानी की चिंता बार बार उन्हें देखने की इच्छा रखने वाले वचनों में प्रगट होती है।

१) **तुम सब से** मिलने की **लालसा करता** हूँ (१:८)।

२) **तुम सब के साथ** रहूँ (१:२५)।

३) एक बार फिर **तुम्हारे पास** आता हूँ (१:२६)।

४) मैं **तुम्हे** देखने आऊँ (१:२७)।

५) मैं भी उनके **साथ आऊंगा** (२:२४)।

६) जिसे **मैं देखने कि लालसा करता हूँ** (४:१)।

टिप्पणियाँ —

१. सहभागिता। पौलुस बार बार अपने आप को दूसरों के सामान सहभागिता में बताता है।

१) सुसमाचार में **सहभागी** (१:५)।

२) **समान दुखों** का अनुभव करना (१:३०)।

३) **मेरे साथ** परिश्रम किया (२:२२)।

४) **संगी साथी**/योद्धा (२:२५)।

५) जिस स्तर तक **हम पहुंचे हैं** (३:१६)।

६) **आदर्श हमने** तुम्हारे सामने रखा (३:१७)।

७) **मेरे सहकर्मी** (४:३)।

ड. कुछ और दोहराए गए शब्द और विचार:

१) निष्पाप (१:१०; २:१५; ३:६)।

२) ग्रहण योग्य/प्रमाणित (१:१०; २:२५)।

३) दृढ़ता से खड़े हो (१:२७; ४:१)।

४) परमेश्वर को महिमा (२:११; १:११; ४:२०)।

५) नक़ल (३:१७; ४:९)।

६) आनंद/पुन: आनंद (१:४,१८; २:२, १७, १८, २८, २९; ३:१; ४:४, १०).

७) परमेश्वर; प्रभु; प्रेम; शांति; सुसमाचार; उद्धार; विश्वास; महिमा; मसीह यीशु।

ग. तीसरी बार पढ़ना।

टिप्पणियाँ —

लेखक की टिप्पणी:

प्रशिक्षक व्यावहारिक बाइबल अध्ययन पाठ्यक्रम में एक विस्तृत रूपरेखा को विद्यार्थियों के लिए मुहैय्या कराएगा।

विद्यार्थियों को प्रत्येक खण्ड के लिए अपनी एक रूपरेखा बनाने के लिए प्रोत्साहित करें। उन्हें निर्देश दें कि वे रूपरेखा के विभिन्न भागों में व्याकरण और साहित्यिक संबंध को बनाये रखने का ध्यान रखें।

सामान्य तौर पर एक अच्छी रूपरेखा तैयार करने के द्वारा आप एक किताब का अध्ययन करना सीख सकते हैं।

टिप्पणियाँ —

लेखक की टिप्पणीः विस्तृत रूपरेखा को विकसित करना

१. पहला कदम पुस्तक को तब तक बार बार पढ़ना है जब तक कि आपके मन और आत्मा में विचारों बहाव प्रारम्भ हो जाए।

२. उसके बाद, पुस्तक की बुनियादी रूपरेखा को तैयार करें।
कहां पर सारे विचार, युक्तियां, विवाद इत्यादि, शुरू या खत्म होते हैं?

इन प्रश्नों के उत्तरों के आधार पर आप इन पुस्तक प्रमुख खण्डों में बांट सकते हैं (आप इन्हें २ से लगभग १५ उससे भी अधिक भागों में बांट सकते हैं)।

अब ध्यान दें कि किस प्रकार से एक भाग दूसरे भाग से जुड़ता है (वास्तविक सम्बन्ध)। इससे आपकी पुस्तक के बहाव को समझने की क्षमता में वृद्धि होगी।

३. उसके बाद में इस प्रक्रिया को दोहराएं। इस बार आप किबात को आप एक इकाई के रूप् में इस्तेमाल न करकें उसके खण्डों को एक इकाई के रूप में कार्य करें। प्रत्येक खण्ड को प्र्याप्त बार पढ़ें ताकि उसका बहाव आपके मन और आत्मा में बैठने लगे। प्रत्येक खण्ड की रूपरेखा तैयार करें।

- कहां पर सारे विचार, युक्तियां, विवाद इत्यादि, शुरू या खत्म होते हैं?
- इन प्रश्नों के उत्तरों के आधार पर आप इन बड़े खण्डों को और छोटे खण्डों में विभाजित कर सकते हो।
- इस स्थान पर आकर आप ध्यान दें कि किस प्रकार अलग अलग भाग एक दूसरें से जुड़ते हैं (व्याकरण और साहित्यिक रूप में)।

४. इस प्रक्रिया को आवश्यकता के अनुसार दोहराया जा सकता है। पहले किताब वह इकाई थी जिस पर हम कार्य कर रहे थे। उसके बाद में आपने बड़े खण्डों में काम किया। अब आप प्रत्येक खण्ड के अन्दर भी एक भाग पर ध्यान दे सकते हैं। यह सिलसिला तब तक जारी रह सकता है जब तक कि आप एक रूपरेखा तैयार करने का चुनाव नहीं कर लेते।

५. याद रखेंः कुंजी यह परिभाषित करना कि विचार कहां पर प्रारम्भ और कहां पर समाप्त होता है, और प्रत्येक स्थापित भागों के बीच में रिश्ते को परिभाषित करना है।

टिप्पणियाँ —

लेखक की टिप्पणीः

विशेष अवलोकन तैयार करने की मार्गदर्शिकाः

कक्षा में जिस स्थान पर विद्यार्थी पुनरावलोकन तैयार करने का अभ्यास कर रहे हों वहां ही उनको चर्चा करने के लिए प्रोत्साहित करें।

एक अवलोकन के तीन परिवर्तनकारी तरीके निम्नलिखित हैंः

१) "भागों को" नीचे लिखें हुए अक्षरों में लिखे गये हैं।

२) खण्डों के बीच में संबंध को **ऊपर लिखे जाने वाले अक्षरों** में लिखा जाएगा।

३) वचनों या पदों को कोष्टक में लिखा जाएगा।

फिलिप्पियों के खण्ड के अनुसार, जिसे पहले तैयार किया गया था विशेष अवलोकनों की सूची निम्नलिखित है।

१. खण्ड १ (फिलिप्पियों १:१,२)।

क. सारे शब्द "संतों", "संरक्षकों", और "डीकनों" बहुवचन हैं (१:१)।

ख. पौलुस अपने आपको और तीमुथियुस को बंधुआ दास कहते हैं (१:१)।

ग. केवल दो वचनों में "यीशु" का नाम तीन बार दोहराया गया है (१:१, २)।

टिप्पणियाँ —

२. खण्ड २ (फिलिप्पियों १:३-११)।

क) यहाँ पर "विनती करता हूँ" और "मैं यह प्रार्थना करता हूँ" के बीच में नियमितता है (१:४, ९)।

ख) "को ध्यान में रखते हुए" आनंद के साथ प्रार्थना करने के लिए पौलुस की प्रेरणा का परिचय दें (१:५)।

ग) "के लिए" विश्वास के लिए **धार्मिकता** का परिचय दें (१:६-८).

घ) यीशु उस प्रेम के **स्रोत हैं** जो पौलुस फिलिप्पियों के लिए महसूस करते हैं (१:८)।

ङ) "कि" पौलुस कि प्रार्थना कि विषय वस्तु को दर्शाता हैं (१:९)।

च) "ताकि" उनके प्रगतिशील प्रेम के उद्देश्य को दर्शाता हैं (१:१०)।

छ) "परिपूर्ण होकर" सिद्ध काल है ओर प्रेम में बढ़ने के तरीके कि ओर इंगित करता है (१:११)।

ज) "द्वारा" यीश की ओर एक **स्रोत** या उस तरीके के **कारण** के रूप में इंगित करता है (१:११)।

झ) "के लिए" जो दिशा निर्धारित करने वाला शब्द है जो तरीके के प्रगटीकरण के **उद्देश्य** परिचय देता है (१:११)।

ञ) "मसीह के दिन के आने तक" को दोहराया गया है (१:६, ९)।

ट) समाप्ति के विचार में नियमितता है: "सिद्ध करें" (१:६); "निष्कलंक" या सिद्ध (१:१०); "भरपूर होते जाओ" (१:११)।

३. खण्ड ३ (फिलिप्पियों १:१२-२६)।

क) "ताकि" **उल्लेख** करता है कि किस तरह कारावास के कारण सुसमाचार कि बढ़ती हुई है; और वह **व्याख्या को जारी रखता** है (१:१३, १४)।

ख) "बोलने" और "प्रचार करने" शब्दों के बीच में नियमितता जारी है (१:१४, १५)।

ग) पौलुस विशेष तौर पर (१:१५) बताता है कि क्यों रोम वासी प्रचार कर रहे है।

टिप्पणियाँ -

घ. दो समूहों की **प्रस्तावना** दी गयी (१:१५) है। फिर उनके **उद्देश्य** की व्याख्या की गयी है (१:१६,१७)।

ङ. **"तो क्या हुआ?"** प्रश्नवाचक को पौलुस (१:१८) की भावनाओं का **निष्कर्ष** निकालने के लिए प्रयोग किया गया है।

च. **"आनन्द"** शब्द को दोहराया गया है (१:१८)। पहले मामले में यह **वर्तमान काल** में है। दूसरी बार यह **भविष्यत्काल** में है।

छ. "क्योंकि" भविष्य के आनन्द के कारण (१:१९) का परिचय देता है।

ज. "द्वारा" और "के अनुसार" छुटकारे के साधनों का परिचय देते हैं (१:१९,२०)।

झ. **"कि"** पौलुस की आशा को दर्शाता है (१:२०); "पर" एक अंतर को दर्शाता है जो पौलुस की आशा की पहचान करना जारी रखता है (१:२०)।

ञ. "चाहे" मसीह को महिमा देने के तरीकों का एक विकल्प पेश करता है (१:२०)।

ट. "क्योंकि" स्पष्टीकरण का परिचय देता है कि दो विकल्पों में से किसी एक का अर्थ उद्धार क्यों होगा (१:२१)।

ठ. "मरने" और "देह-त्याग" (१:२१,२३) शब्दों के बीच निरंतरता है। "लाभ" और "बहुत ही अच्छा" (१:२१,२३) के बीच निरंतरता है।

ड. "जीवित"(१:२१), "जीवित" (१:२२), और "रहने" (१:२४) के बीच निरंतरता है। इस प्रकार, "मसीह" (१:२१), "शरीर" (१:२२), और "शरीर" (१:२४) के बीच भी निरंतरता है।

ढ. "तुम्हारे कारण रहने"...(१:२४) और "दृढ़ रहने" (१:२५) के बीच निरंतरता है।

ण. "ताकि" पौलुस के उनके साथ बने रहने के उद्देश्य का परिचय देता है (१:२६)।

टिप्पणियाँ

४. खण्ड ४ (फिलिप्पियों १:२७-२:१८)।

क. "स्वयं का चाल-चलन" (१:२७), "सब काम" (२:१४) और "कुछ न करो" (२:३) के बीच निरंतरता है।

ख. "कि चाहे" उनके अच्छे आचरण के उद्देश्य का परिचय देता है (१:२७)।

ग. "एक मन" और "एक आत्मा" (१:२७) के बीच निरंतरता है।

घ. "क्योंकि" एक युक्तिकरण का परिचय देता है कि जीवन का तरीका ऐसा क्यों है (१:२९)।

ङ. १:२७; २:१; और २:२ के बीच निरंतरता के कई महत्वपूर्ण अवलोकन हैं:

१) "स्थिर" (१:२७); "प्रोत्साहन/सांत्वना" (२:१); "पूरा करो" (२:२)।

२) "एक आत्मा/एक मन" (१:२७); "आत्मा की संगति" (२:१); "एक ही चित्त/मन" (२:२)।

३) "एक साथ परिश्रम" (१:२७); "करुणा" (२:१); "एक उद्देश्य पर इरादा" (२:२)।

च. "मसीह के योग्य चाल-चलन" (१:२७), और "तुम्हारा स्वभाव भी मसीह जैसा हो" (२:५) के बीच निरंतरता है।

छ. ग्रीक शब्दों को दोहराया गया है: "मन" = "उद्देश्य" = "दृष्टिकोण" (२:२ और २:५)।

ज. "कुछ मत करो ... लेकिन" और "नहीं ... लेकिन" (२:३ और २:४) के बीच निरंतरता है। इस निरंतरता के कारण हम कह सकते हैं कि २:४ अधिक स्पष्ट रूप से २:३ की व्याख्या करता है।

झ. "पर" शब्द अंतर (२:३ और २:४) का परिचय देता है।

ञ. "से" उस विधि का परिचय देता है जो "एक दूसरे को अपने से अधिक महत्वपूर्ण मानने" में सक्षम हुआ करती थी (२:३)।

टिप्पणियाँ -

ट. "जिसने" परिचय देता है कि मसीह ने क्या किया और इसलिए यह उस विधि का परिचय देता है कि व्यवहार कैसा होना चाहिये (२:६)।

ठ. "इसलिए" मसीह के कार्यों के परिणामों (२:९) का परिचय देता है।

ड. सामान्य से विशिष्ट (विनिर्देश) की ओर एक कदम है जो परिणाम की व्याख्या (२:९-११) करता है।

ढ. "के लिए" एक दिशात्मक शब्द है और मसीह की महिमा के उद्देश्य (२:११) को दर्शाने का कार्य करता है।

ण. "इसलिए" एक निष्कर्ष या एक निहितार्थ (२:१२) का परिचय देता है।

त. हम अनुच्छेद (१:२७-२:१३ और २:१४-१८) के बीच निरंतरता को देख सकते हैं:

१) १:२७-२:१३ में हम एक आचरण देखते हैं:

क) एकता।

ख) विपक्ष के विरूद्ध खड़े होना।

२) २:१४-१८ में हम एक आचरण देखते हैं:

क) कुड़कुड़ाने या विवाद (एकता) की कमी।

ख) "बीच में" (विपक्ष), और "पकड़ना" (विरोध के विरूद्ध खड़ा होना)।

३) १:२७-२:१३ में हमारे पास है:

क) एक उदाहरण (यीशु)।

ख) इस बात का निहितार्थ कि फिलिप्पियों को उस उदाहरण के प्रति कैसी प्रतिक्रिया दिखानी चाहिए।

टिप्पणियाँ

४) २:१४-१८ में हमारे पास है:

क) एक उदाहरण (पौलुस)।

ख) इस बात का निहितार्थ कि फिलिप्पियों को उस उदाहरण के प्रति कैसी प्रतिक्रिया दिखानी चाहिए।

थ. "वह" न कुड़कुड़ाने के उद्देश्य का परिचय देता है (२:१५)।

५. खण्ड ५ (फिलिप्पियों २:१९-३०)।

क. २:१९; २:२४; और २:२५ के बीच निरंतरता है:

१) "मुझे प्रभु यीशु में आशा है कि मैं तीमुथियुस को तुम्हारे पास तुरंत भेजूँगा" (२:१९)।

२) "और मुझे प्रभु में भरोसा है, कि मैं आप भी शीघ्र आऊँगा" (२:२४)।

३) "पर मैं ने तुम्हारे पास इपफ्रुदीतुस को भेजना आवश्यक समझा" (२:२५)।

ख. "ताकि" तीमुथियुस की यात्रा के उद्देश्य का परिचय देता है (२:१९)।

ग. फिलिप्पियों की आत्मिक स्थिति के बारे में जानने की पौलुस की इच्छा के संबंध में निरंतरता है (१:२७; २:१२ और २:१९)।

घ. "क्योंकि" तीमुथियुस को विशेष रूप से (२:२०) भेजने के कारण या औचित्य का परिचय देता है।

ङ. "क्योंकि" तीमुथियुस को भेजने के लिए एक और कारण और किसी और को न भेजने के लिए एक कारण का परिचय देता है (२:२१)।

च. "पर" तीमुथियुस और २:२१ (२:२२) में संदर्भित लोगों के बीच एक अंतर का परिचय देता है।

छ. "जैसा" एक तुलना (२:२२) का परिचय देता है।

ज. "मेरा" शब्द दो बार दोहराया गया है और दो बार निहित है (२:२५)।

टिप्पणियाँ -

झ. पौलुस इपफ्रुदीतुस को भेजने के तीन कारण बताते हैं और उनका परिचय निम्न के साथ देते हैं:

१) "क्योंकि" (२:२६)

२) "इसलिए" (२:२८)

३) "और" (२:२८ में निहित है)।

ञ) "क्योंकि" इस कारण का परिचय देता है कि फिलिप्पियों को इपफ्रुदीतुस का सम्मान क्यों करना चाहिए (२:३०)।

६. खण्ड ६ (फिलिप्पियों ३:१-४:९)।

क. "इसलिए" शब्द को दो बार दोहराया गया है (३:१ और ४:८)।

ख. "कुशलता" और "चौकस" शब्दों (३:१ और ३:२) के उपयोग में विचार की निरंतरता है।

ग. वाक्यांश "झूठा खतना" और "सच्चा खतना" एक अंतर को दिखाते (३:२ और ३:३) हैं।

घ. "व्यवस्था" शब्द तीन बार दोहराया गया है (३:५,६,९)।

ङ. "शरीर पर भरोसा न रखना" और "मैं आप ही शरीर पर भी भरोसा रख सकता हूँ" (३:३ और ३:४) के बीच अंतर है।

च. "ताकि मैं" मसीह के लिए सब कुछ खोने में पौलुस के उद्देश्य का परिचय देता है (३:१०)।

छ. "समान होना" पहले उल्लेख किये गये उद्देश्यों (३:१०) को प्राप्त करने की विधि का परिचय देता है।

ज. "उसको पकड़ने में" विधि के परिणाम (३:११) का परिचय दिया गया है।

झ. "पर" "पकड़ने" और "सिद्ध" (३:१२) के बीच अंतर की ओर इशारा करता है।

ञ. "उसको पकड़ने" के लिए उद्देश्य का परिचय देता है (३:१२)।

टिप्पणियाँ -

ट. "पकड़ने के लिए"; "आगे बढ़ने"; और "निशाने की ओर दौड़ते चले जाओ" (३:१२,१३,१४) वाक्यांशों के बीच एक वैचारिक निरंतरता है। प्रत्येक वाक्यांश आगे की ओर इशारा करता है और एक प्रक्रिया की बात करता है।

ठ. ३:१७ (३:२०) में "पर" पौलुस के निर्देश के औचित्य का परिचय देता है।

ड. "पृथ्वी की" और "स्वर्ग" (३:१९ और ३:२०) के बीच एक अंतर है। "हमारी दीन-हीन देह" और "महिमा की देह" (३:२१ और ३:२०) के बीच एक विरोधाभास है।

ढ. **"के अनुसार"** परिवर्तन के स्रोत का परिचय देता है (३:२१)।

ण. **"इसलिए"** फिलिप्पियों के भविष्य की आशा के प्रति आवश्यक प्रतिक्रिया के निहितार्थ का परिचय देता है जिसका उल्लेख पौलुस ३:२१ (४:१) में करते हैं।

त. **"स्थिर रहो"** को दोहराया गया है (१:२७ और ४:१)।

थ. **"आनन्दित"** और **"चिंता"** शब्दों (४:४ और ४:६) के बीच अंतर है।

द. **"परन्तु"** चिंता के लिए एक विकल्प का परिचय देता है (४:६)।

ध. "तब परमेश्वर की शांति" और "जो शान्ति का परमेश्वर है" (४:७ और ४:९) वाक्यांशों के बीच **निरंतरता** है। ये दोनों वाक्यांश निर्देशों का पालन करने के परिणामों का परिचय देते हैं।

७. खण्ड ७ (फिलिप्पियों ४:१०-२०)।

क. "क्योंकि" इस **कारण** का परिचय देता है कि क्यों पौलुस "अनावश्यक बातें नहीं करते" (४:११)।

ख. वाक्यांशों को दोहराया गया है:

१) "कि मैं नहीं" (४:११)।

२) "कि मैं नहीं" (४:१७)।

टिप्पणियाँ -

ग. निम्नलिखित अनुच्छेदों के बीच निरंतरता है:

घ. **"जो तुम्हारे लाभ के लिए बढ़ता जाए"** (४:१७)

ङ. **"हर एक घटी को पूरी करेगा"** (४:१९)

च. **"तुमने भेजा" और "भेजी थीं"** वाक्यांशों (४:१६ और ४:१८) के बीच दोहराव है।

८. खण्ड ८ (फिलिप्पियों ४:२१-२३)। "नमस्कार" शब्द को तीन बार (४:२१,२२) दोहराया गया है।

VI. पाठ्यक्रम का निष्कर्ष।

क. इस पाठ्यक्रम का तात्कालिक लक्ष्य।

१. अब हमें आगमनात्मक बाइबल अध्ययन की समझ है। हमने अवलोकन करने का अभ्यास किया है।

२. हमारा तात्कालिक लक्ष्य आगमनात्मक बाइबल अध्ययन की पूरी प्रक्रिया का अभ्यास करना है। ऐसा इस श्रृंखला के निम्नलिखित चार पाठ्यक्रमों में किया जाएगा।

टिप्पणियाँ

ख. इस पाठ्यक्रम के आगामी लक्ष्य।

१. जब छात्र इस पाठ्यक्रम को समाप्त करेगा तो वह व्यावहारिक बाइबल अध्ययन श्रृंखला शुरू कर पाएगा।

२. इस अनुभव के द्वारा, यह आशा की जाती है कि छात्र के पास:

क) बाइबल की किसी भी अन्य पुस्तक का अध्ययन करने की क्षमता होगी।

ख) बाइबल की अन्य सभी पुस्तकों का अध्ययन करने की इच्छा होगी।

१) यह एक जीवन भर चलने वाली प्रक्रिया है और यह आपके जीवन के सर्वोच्च लक्ष्यों में से एक होनी चाहिए।

२) यदि आप परिश्रमी हैं तो आपको बाइबल की कई किताबों का विस्तृत अध्ययन करने में सक्षम हो जाना चाहिए।

३) अपने जीवन की अवधि के दौरान आप बाइबल की अनेक पुस्तकों पर अपनी स्वयं का विवरण विकसित कर सकते हैं।

४) इन व्यक्तिगत अध्ययनों से शिक्षाएँ, उपदेश, ज्ञान, और सबसे महत्वपूर्ण रूप से परमेश्वर के लिए स्वयं को आपके सामने प्रगट करने और आपको अपने पुत्र यीशु के स्वरुप में बदलने का अवसर मिलता है।

टिप्पणियाँ -

बाइबल अध्ययन का परिचय: अंतिम टिपण्णी

[१]रॉबर्ट ट्रेना, मेथडिकल बाइबल स्टडी। विल्टमोर, केवाई: ज़ोंडरवन पब्लिशिंग हाउस, १९८५।

[२]चार्ल्स होल्मन, रीजेंट यूनिवर्सिटी के प्रिंसिपल्स ऑफ बाइबल स्टडी कोर्स, प्रभात १९८७।

बाइबल अध्ययन का परिचय

टिप्पणियाँ -